International Journal of Humanities and Social Science Invention
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 4 Issue 10 || October. 2015 || PP.65-67

समाज कार्य के सिद्धांत

डॉ० राम सेवक सिंह यादव

एसोसिएट प्रोफेसर,

समाजशास्त्र भाऊ राव देवरस राजकीय महाविद्यालय दुदधी सोनभद्र

समाज कार्य एक व्यावसायिक कार्य है और बिना मूल्यों के कोई भी व्यवसाय नहीं बन सकता । समाज कार्य के माध्यम से व्यक्ति में सामाजिक एवं व्यक्तिगत परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है इसलिए समाज कार्य में मूल्यों का होना आवश्यक है। समाज कार्य की विभिन्न अवधारणाओं का ज्ञान और समाज कार्य की विधियों का ज्ञान कार्यकर्ता के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त नहीं हो सकता जब तक वह इस ज्ञान और समाज कार्य के अभ्यास के फलस्वरूप एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व का विकास नहीं कर लेता।

यह व्यक्तित्व समाज कार्य की मनोवृतियों एवं मूल्यों पर आधारित होता है। इसकी सहायता से समाज कार्यकर्ता व्यक्तिगत,समूहिक एवं सामुदायिक क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं एवं संदर्शो और विरोधी मूल्यों को दूर करने का प्रयास करता है। वह ऐसे मूल्यों को स्वीकार करने में सहायता देता है जो सभी को मान्य हों और जिससे सम्पूर्ण समुदाय, समूह एवं व्यक्तियों का विकास संभव हो सके। समाज कार्य के अनेक मूल्य है जो समाज कार्य को एक व्यावसिकता प्रदान करतें है अनेक विद्वानों के द्वारा समाज कार्य के इन मूल्यों को अपने-अपने रूप में परिभाषित किया है जो समाज कार्य व्यवसाय को एक दिशा प्रदान करते हैं और जिनका समावेश समूह कार्य प्रणाली में किया जाता है

विभिन्न विद्वानों सामाजिक विचारकों , विशेषज्ञों, शिक्षाविदों के विचारों से अवगत होने के पश्चात समूह कार्य के मूल्यों को निम्नानुसार बताया जा सकता है-

आत्म निर्णय का अधिकार - इसके द्वारा समूह सदस्यों से यह विश्वातस किया जाता है कि वे स्वंय अपने निर्णय लेने में सक्षम बन सकें और साथ ही अपने मार्ग को प्रशस्त कर सकें।

समूह सदस्यों की योग्यता एवं महत्ता पर विश्वास - प्रत्येक व्यक्ति में अपनी कुछ विशेषताएँ होती है जो दूसरे किसी अन्य व्यक्ति में नहीं होती । प्रत्येक सदस्य को समान अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे वह समस्या के समय स्वयं ही समस्या का निराकरण खोजने में सक्षम हो जाय । समूह कार्य का लक्ष्य तब तक पूरा नही हो पायेगा जब तक कि प्रत्येक सदस्य की योग्यता एवं महत्ता पर विश्वाकस नहीं किया जायेगा। इसी आधार पर कार्यकर्ता अपनी भूमिका का क्रियान्वयन करता है।

आत्म-पूर्णता - सामाजिक सामूहिक कार्य का मुख्य उद्देश्य समूह का पूरण विकास करना होता है। इसके अन्तर्गत उन्हीं कार्यक्रमों को उपयोग में लाया जाता है, जिनसे सदस्यों का सर्वोगीण विकास सम्भगव होता है।

विकास का मुख्य आधार संबंध - मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसका आधार संबंधो पर निर्भर करता और व्यक्ति का सर्वोगीण विकास भी इन्हीं सकारात्मक संबंधों पर आधारित होता है।

व्यक्तित्व अन्तरों की मान्यता एवं संस्कृति- प्रत्येक व्यक्ति विचारों, भावनाओं ,चिन्तन, तथा सामाजिक पृष्टभूमि में भिन्न होता है। उसकी शक्तियों तथा योग्यताओं में भी भिन्नता होती है । समूह कार्य में सभी व्यक्तिओं के विचारों को महत्व देकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

समूह पर संस्कृति का प्रभाव - प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी संस्कृति, परम्परा व रीति-रिवाज इत्यादि को मान्यता प्रदान करता है एवं उसी के अनूसार अपना प्रभाव समूह में प्रदर्शित करता है। समूह कार्यकर्ता यह ध्यान में रखता है कि किस समूह का निर्माण किया जा रहा है उसमें सदस्यों की संस्कृति में कम भिन्नता पायी जाय इसलिय समूह सदस्यों की संस्कृति का अध्ययन पूर्व में कर लेना चाहिए।

परिवर्तन का विरोध - परिवर्तन संसार का नियम है यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समूह में भी निरन्तर परिवर्तन स्वाभाविक ही है एवं इन परिवर्तनों के चलते कई बार समूह में विरोधाभास भी हो जाता है। अतः समूह कार्यकर्ता द्वारा इस विरोधाभास को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

विकास के समान अवसर - समूह कार्य प्रक्रिया में सदस्यों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे की वे समूह की गतिविधियों में समान रूप से भाग ले सके और समूह में सक्रियता बनाये रखे ।

समाज कार्य एक व्यावसायिक सेवा है जिसके अंतर्गत समाज कार्य में प्रशिक्षित कार्यकर्ता सेवार्थी (व्यक्ति, समूह और समुदाय) की सहायता के लिए कार्य करता है। वह इस दौरान अपने सेवार्थी को बेहतर सेवा प्रदान करने का प्रयास करता है। समाज कार्य व्यवसाय के कुछ आधारभूत सिद्धांत हैं जिनका पालन करना सामाजिक कार्यकर्ता के लिए आवश्यक माना जाता है-

1- **संचार का सिद्धांत –** आपस में विचारों का आदान-प्रदान ही संचार है। जब कार्यकर्ता और सेवार्थी पहली बार मिलते हैं तो ही दोनों के बीच बात-चीत और विचार विमर्श की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है और उनमें संचार प्रारंभ हो जाता है। यह संचार किसी भी तरह का हो सकता है जैसे लिखित,अलिखित, मौखिक या सांकेतिक। इसके लिए कार्यकर्ता को चाहिए कि सेवार्थी की ही बोली या भाषा का प्रयोग करे जिससे संप्रेषण आसानी से सेवार्थी तक पहुँच सके। कार्यकर्ता को प्रभावी संचार के माध्यम से सेवार्थी के मानसिक कष्टों का समाधान करना चाहिए।

2- **वैयक्तिकरण का सिद्धांत-** इसका तात्पर्य है सेवार्थी के विशिष्ट इवान गुणों को ज्ञात करना और सिद्धांतों एवं प्रणालियों के प्रयोग द्वारा प्रत्येक सेवार्थी की अलग-अलग तरीके से सहायता करना जिससे वह अच्छी तरह समायोजित हो सके। प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह अपनी रूचि के अनुसार विकास करे। कार्यकर्ता को यह स्वीकार करना होगा कि प्रत्येक व्यक्ति में कुछ ऐसी भी योग्यताएं होती हैं जो दूसरों में नहीं पायी जातीं।

3- **स्वीकृति का सिद्धांत-** इसका अर्थ यह है कि सेवार्थी जिस स्थिति में है उसे उसी स्थिति में स्वीकार किया जाए और उसकी वर्तमान स्थिति के अनुसार उसके साथ उससे व्यवहार किया जाए और उसके संबंध में कोई राय बनाई जाए। कार्यकर्ता और सेवार्थी दोनों को एक-दूसरे को स्वीकृति प्रदान करनी चाहिए। कार्यकर्ता को सेवार्थी की नैतिक या अनैतिक किसी भी स्थिति का ध्यान रखे बिना उसे उसकी समस्या के समाधान में सहायता करनी चाहिए। सेवार्थी को जब कार्यकर्ता तथा उसकी योग्यता पर पूर्ण विश्वास होगा तभी वह कार्यकर्ता को सहयोग करेगा। कार्यकर्ता को सेवार्थी की विशिष्टता तथा क्षमता का सम्मान करना चाहिए और उसके लिए एक विशिष्ट समाधान प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

4- **गोपनीयता का सिद्धांत-** सेवार्थी की समस्याएँ व्यक्तिगत होती हैं जिन्हें वह चाहता है कि गोपनीय रखा जाए इसलिए कार्यकर्ता को चाहिए कि सेवार्थी जो भी बात कार्यकर्ता से करे या कार्यकर्ता को जो कुछ भी सेवार्थी के बारे में मालूम हो उसे कार्यकर्ता गोपनीय रखे। अगर ऐसी कोई बात आती है कि सेवार्थी की समस्या का समाधान करने के लिए उसे किसी अन्य विशेषज्ञ से साझा करना आवश्यक है तो तो कार्यकर्ता को सेवार्थी के समक्ष यह स्पष्ट कर देना चाहिए अर्थात सेवार्थी की सहमति आवश्यक है। यदि सेवार्थी गोपनीयता के प्रति आश्वस्त नहीं होगा तो वह अपनी बात रखने में भी संकोच करेगा।

5- **आत्मनिर्णय का सिद्धांत-** इसे समाज कार्य का प्रमुख सिद्धांत माना जाता है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि किसी भी व्यक्ति को अपने लिए सबसे उपयुक्त का चयन करने का अधिकार है। सेवार्थी को समस्या समाधान के प्रत्येक चरण में उसे आत्मनिर्णय का पूरा अधिकार होता है। इस संदर्भ में कार्यकर्ता को सेवार्थी की सहायता करनी चाहिए जिससे सेवार्थी उचित निर्णया ले सके। इससे सेवार्थी के आत्म सम्मान एवं आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है।

6- **नियंत्रित संवेगात्मक संबंध का सिद्धांत-** इसके अंतर्गत इस बात की सावधानी राखी जाती है कि कार्यकर्ता को सेवार्थी को देखकर उससे व्यक्तिगत या भावनात्मक लगाव नहीं रखना चाहिए। क्योंकि कार्यकर्ता एक व्यावसायिक व्यक्ति है इसलिए उसे व्यावसायिक प्रक्रिया का पालन संबंध स्थापन के दौरान करना चाहिए। यहाँ कार्यकर्ता को वस्तुनिष्ठ होने की आवश्यकता रहती है। सेवार्थी की समस्या के संदर्भ में व्यक्तिगत निर्णय नहीं लेना चाहिए। क्योकि अधिक सहानुभूती कार्यकर्ता के आत्मनिर्णय और स्वतंत्रता में हस्तक्षेप कर सकती है। कार्यकर्ता को परानुभूति का उपयोग करते हुए अपने भावनाओं एवं संवेगों पर नियंत्रण रखना चाहिए तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करना चाहिए। सेवार्थी की भावनाओं को व्यावसायिक संवेदनशीलता के आधार पर समझकर व्यावसायिक ज्ञान और उद्देश्य के आधार पर उसका उत्तर देना चाहिए।

7- अनिर्णयात्मक मनोवृत्ति का सिद्धांत- इसके तहत कार्यकर्ता के द्वारा सेवार्थी या उसकी समस्या को देखकर कोई भी निर्णय तुरंत नहीं लेना चाहिए अपितु तब तक कोई किसी नतीजे पर तब टाका नहीं पहुँचना चाहिए जब तक कि सेवार्थी कि समस्या का सही ढंग से अध्ययन और निदान न कर लिया जाय। यह सिद्धांत कार्यकर्ता को सेवार्थी के बारे में कोई भी अतार्किक या अवैज्ञानिक निर्णय लेने से रोकता है।

निष्कर्ष

व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता सामुदायिक जीवन के प्रत्येक पक्ष - वृद्धाश्रमों, अनाथालयों, स्कूलों, अस्पतालों, मानसिक स्वास्थ्य क्लीनिक, कारागारों, निगमों तथा अनेक सार्वजनिक एवं निजी एजेंसियों में होते हैं, जो जरूरतमंद व्यक्तियों तथा परिवारों की सेवा करते हैं। सामाजिक कार्य केवल अच्छे कार्य करने तथा शोषित व्यक्तियों की सहायता करने तक ही सीमित नहीं हैं। काफी समय से यह एक व्यवसाय के रूप में उभरा है। वास्तव में यह कोई परम्परागत करियर नहीं है। बल्कि निरंतर बढ़ती जा रही विकलांगता, निर्धनता, मानसिक रोग-स्वास्थ्य, वृद्धावस्था से जुड़ी समस्याओं आदि मामलों के साथ ही सामाजिक कार्य आज हमारे समाज की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। यदि आप भावात्मक पूर्ति के लिए कोई व्यवसाय चुनने के इच्छुक हैं और आपका कार्य-उद्देश्य केवल धन कमाना नहीं है तो यह आपके लिए एक आदर्श करियर होगा।

संदर्भ सूचि

1. https://www.esvvf.com/%E0%A4%B8%E0%A4%AE-%E0%A4%9C-%E0%A4%95-%E0%A4%B0-%E0%A4%AF
2. (http://sandeepmalhan88.blogspot.in/2012/06/blog-post_28.html)
3. ओकिन, सूजन, मुलर जेंडर दी पब्लिक एंड दा प्राइवेट